श्री अरविन्द (1872-1950)

- अरविन्द घोष का जन्म पश्चिम बंगाल के कोननगर में 15 अगस्त 1872 में हुआ था।
- 1910 में अप्रैल माह में उन्होंने 'पाण्डिचेरी' में अपना निवास बनाया। वो निवास 'आश्रम' का रूप ले लिया इसका देखरेख उनकी शिष्या - 'मीरा रिचर्ड' जो करने लगी जिसे 'आश्रम की माँ' कही जाने लगी।
- 5 दिसम्बर 1950 को उन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त की।
- श्री अरविन्द का दर्शन 'आध्यात्मवाद (Idealism) का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है, क्योंकि 'सत्' के स्वरूप को वे आध्यात्मिक मानते है, तथा साथ ही एक 'चरम आदर्श' की भी कल्पना करते है जिसकी ओर पूर्ण मानव जाति के प्रवृत्त होने की अनुशंसा की गयी है। किन्तु उनका यह आदर्शवाद या आध्यात्मवाद न तो 'अमूर्त एकवाद' (Abstract Monism) के समान है और न एकेश्वरवाद (Theism) के समान है।
- श्री अरविन्द निषेधों के दो रूप बताते है —
  (1) जड़वादी निषेध (Materialistic Denial) तथा
  (2) वैराग्यमूलक अस्वीकृति (The refusal of the ascetic)

सत् का स्वरूप ✓ श्री अरविन्द (तत्वमीमांसीय सिद्धांत) सत् के स्वरूप के विषय में भौतिकवादी एवं आध्यात्मवादी/आदर्शवादी दोनों सिद्धांत को एकांगी मानते है तथा 'सत्' को दोनों रूपों में समन्वित करते है

- ~~सत्~~ 'सत्-सच्चिदानन्द' उनके अनुसार सत् पूर्णतया आध्यात्मिक है, फिर भी 'सत्' में भौतिक के लिये स्थान है। ऐसा उनके 'ब्रह्म विचार' में पाते हैं। शंकर के ब्रह्म से भिन्न अरविन्द 'ब्रह्म' की व्याख्या करते है उनका कहना है कि यदि 'विश्व चेतना' का विश्लेषण करें तो एक ऐसा बिन्दु स्पष्ट होता है जहाँ 'आत्मा' के लिए जड़तत्व भी वास्तविक हो जाता है, तथा जड़तत्व के लिए 'आत्मा' भी वास्तविक है।
- श्री अरविन्द 'सत्' को जानने के लिए उसके विभिन्न स्तरों या गांठों (Levels or cords of Being) की बात करते हैं लेकिन अरविन्द भी पूर्णसत् को 'एक' मानते हैं।

** सत् अनिवार्यतः एक है यह 'अव्यक्त' रूप है तथा उसके विभिन्न रूप अभिव्यक्त रूप हैं।

- श्री अरविन्द सत्ता के आठ स्तरों की बात करते है

ऊर्ध्वगामी ↓

(1) शुद्ध सत (Pure Existence)
(2) चित् शक्ति (Consciousness-force)
(3) आनन्द (Bliss)
(4) अतिमानस (Supermind)

} उच्चतर गोलार्द्ध

आरोहण ↑

(5) मानस (Mind)
(6) मन (Psyche)
(7) प्राण (Life) तथा
(8) जड़तत्व (Matter)

} निम्नतर गोलार्द्ध

- तयात्मक सत् में सच्चिदानन्द है, जिसके सत्, चित शक्ति और आनन्द तीन रूप निहित है।

* सृष्टि का स्वरूप: विकास प्रक्रिया

परमसत् की आह्लादपूर्ण अभिव्यक्ति 'सृष्टि' है।

- श्री अरविन्द सृष्टि का विचार द्विगुणात्मक-प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते है। वे है -

(1) एक तो परमतत्व का जगत के रूप में अवतरण (Descent)
(2) दूसरी और यह जगत के रूपों का उच्चतर रूपों में आरोहण है उत्थान है (Ascent)।

विकास की प्रक्रिया

- श्री अरविन्द के अनुसार 'अवतरण' तथा उत्थान की प्रक्रिया ही सृष्टि है। अतः उत्थान प्रक्रिया को अरविन्द विकास प्रक्रिया कहते है तथा अवतरण प्रक्रिया को अन्तर्वलन-प्रक्रिया (Involution) कहते है।

अवतरण (Descent) ↓ (अन्तर्वलनप्रक्रिया (Involution)

उत्थान (Ascent) ↑

* अवतरण या अन्तर्वलन (Descent or Involution) -

वेदान्त में सृष्टि को 'अविद्या' से दिखाया है, जिसके परिणामस्वरूप सृष्टि को वास्तविकता का बोध होता है। अज्ञान या अविद्या के कारण हम जगत को वास्तविक समझते है, यह एक प्रकार का भ्रम या लीला है।

- श्री अरविन्द भी इसी प्रकार का सृष्टि के संबंध में "आत्मा का अज्ञान में निमज्जन" आत्मा का अज्ञान में प्रविष्ट हो जाना (Plunge of the Spirit into Ignorance) कहते है

सृष्टि आत्मा का अज्ञान में अन्तर्वलन

- श्री अरविन्द के अनुसार सृष्टि अनिवार्यतः अभावरूप नहीं है। इसकी अपनी सत्ता है इसका अपना स्थान है, और सत्र के साथ पूर्णतया संगत है।

(माया तथा लीला)

* क्यों सृष्टि हुयी? उत्तर — लीला
  कैसे सृष्टि हुयी? उत्तर — माया

- वेदान्त के समान अरविन्द मानते है कि सृष्टि आनन्द की अभिव्यक्ति है। सृष्टि आनन्द की लीला है।

- सच्चिदानन्द अपने को जगतरूप में व्यक्त करते है यही माया है। माया सच्चिदानन्द की शक्ति है।

उत्थान अथवा विकास (Ascent of Evolution) -

* उत्थान अथवा विकास का अर्थ होता है 'निम्नतर का उच्चतर में विकसित होना' और यह तभी संभव है जब उच्चतर का निम्नतर में अवतरण हो। सत्ता के आठों स्तरों के क्रम में ये दोनों प्रक्रियाएं चलती हैं। उच्चतर रूपों के जड़तत्व, प्राणतत्व, मन आदि में अवतरण से ही इन तत्वों का उच्चतर रूपों में विकास हो पाता है।

- उच्चतम सीढ़ी का चरम बिन्दु 'परमसत्' और यह अवतरित है निम्नतर सीढ़ी के चरम बिन्दु 'जड़तत्व' में है

- इनके विकास सिद्धांत की विशिष्टता है कि अपने अन्तर्गत अन्य सभी प्रकार के विकास-सिद्धान्तों को समाविष्ट कर लेता है। विकास की प्रक्रिया को एक दृष्टि से पुनरावृत्तिमूलक (Repetitive) तथा उद्गमनात्मक (Emergent) कहा जाता है, तो इसको दृष्टि से यन्त्रवादी (Mechanical) तथा प्रयोजनवादी (Teleological) कहा जाता है।

* अरविन्द के अनुसार विकास प्रक्रिया में तीन प्रक्रियाएं समाविष्ट हैं—
  1. विस्तारण (Widening)
  2. उच्चत्व की ओर उन्मुखता (Heightening)
  3. पूर्णीकरण / समाकलन (Integration)

* पूर्णीकरण की प्रक्रिया विकास की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। अरविन्द के अनुसार पूर्णीकरण का अर्थ है - अवतरण के द्वारा उत्थान (Ascent through Descent) उच्चतर रूप निम्नतर रूपों में अवतरित हो उसके स्वरूप में ही परिवर्तन कर देते है और ... ले लेता है।

* अरविन्द के अनुसार "सृष्टि सत का अज्ञान में प्रविष्ट होना" है।
* विकास प्रक्रिया ज्योति की क्रमिक विकास की प्रक्रिया है, जिसका प्रारम्भिक बिन्दु 'पूर्णज्ञान-शून्यता' है, तथा उसकी परिणति 'पूर्णज्ञान' है। ये दोनों छोर है तथा मध्य में अज्ञान (Ignorance) का क्षेत्र है
* श्री अरविन्द के अनुसार विकास प्रक्रिया अब तक जड़तत्व (Matter), प्राणतत्व (Life) मन (Psyche) से होती हुई मानस (Mind) के स्तर तक पहुँच चुकी है। प्राण जड़तत्व से विकसित होते हैं अतः जड़ से दूर उठा नहीं है। मानस को उन्नत अतिमानस तक पहुँचने की प्रतीक्षा है।

* अस्तित्व के चार सिद्धांत -
(1) परात्म-मूलक सिद्धांत (The Other Worldly theory)
(2) ब्रह्माण्डमूलक अथवा इहलौकिक सिद्धांत (The cosmic or the Terrestrial)
(3) पारलौकिक सिद्धांत (The supraterrestrial or the other worldly)
(4) पूर्ण अद्वैतवादी अथवा सांश्लेषिक सिद्धांत (The Integral or the synthetic)
- अरविन्द - शंकर, बौद्ध, स्पीनोजा एवं जैनी को तत्त्वमीमांसीय दृष्टि से प्रथम कोटि में रखते हैं क्योंकि ये सभी सत को पूर्णतया परात्ममूलक मानते हैं। अरविन्द इस मत को एकांगी मानते हैं।
- द्वितीय सिद्धांत ब्राह्मण के सत को वास्तविक मानते है यह सिद्धांत सिर्फ जगत को ही सत मानता है। चार्वाक भी कोटी में आते है। अरविन्द इसे भी एकांगी मानते हैं।
- तृतीय मत पारलौकिक सिद्धांत केवल परात्मतत्वों की ही यथार्थता स्वीकारते हैं। अर्थात यह सिद्धांत दोनों मत का समन्वय करता है लौकिक जगत तथा उसके परे की सत्ता दोनों को सत्य मानता है। अरविन्द इसकी भी आलोचना करते हैं कहते हैं कि इस जगत में ही "दिव्य जीवन" सम्भव है।
- पूर्ण अद्वैतवादी अथवा सांश्लेषिक सिद्धांत (Integral) अरविन्द का तत्त्वमीमांसीय सिद्धांत इसी कोटी में आता है।